

में बेहतर प्रस्फुरन (sprouting) तथा जीवितता (survival) पाई जाती है। एक हेक्टेयर क्षेत्र में खेती के लिए लगभग 30000 कटिंग्स की आवश्यकता होती है।



नर्सरी तकनीक

रोपणी में बीज अथवा कटिंग्स से पौध सामग्री तैयार की जाती है। इसके बीजों में 90 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है। टिशूकल्चर से भी इसकी पौध सामग्री तैयार की जा सकती है। नर्सरी में पौधे जुलाई से सितम्बर माह के बीच थैलियों अथवा स्टाइरोफोम ट्रेज (styrofoamtrays) में उगाये जाते हैं। यदि शेड नेट हाउस (shadenethouse) की सुविधा उपलब्ध है, तो नर्सरी में पौधे ग्रीष्म काल में भी तैयार किये जा सकते हैं, परन्तु शेड नेट हाउस में पर्याप्त आर्द्रता बनाई रखनी होगी। कटिंग्स से जड़ निकलने के लिए उपयुक्त जड़ प्रवर्धक हार्मोन्स से उपचारित करना चाहिए। लगभग 30 से 45 दिन में कटिंग्स में जड़ निकलने लगती है।

क्षेत्र तैयारी

खेत की ट्रेक्टर अथवा हल से जुताई कर पाटा चलाकर मिट्टी को समतल कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् 60 X 60 से.मी. अन्तराल पर 30 X 30 X 30 से.मी. आकार के गड्ढे खोदे जाते हैं। गड्ढों में 1-2 कि.ग्रा. गोबर खाद/कम्पोस्ट/वर्मीकम्पोस्ट/ फार्म यार्ड मेन्योर (FYM) तथा आवश्यकतानुसार रेत का मिश्रण भरा जाता है। 27000-28000 पौधे प्रति हेक्टेयर के लिए पर्याप्त हैं।

रोपण

नर्सरी में कटिंग से तैयार पौधों, जिनमें 3-5 पत्तियों आ गई हो को खेत में पहले से तैयार गड्ढों में वर्षा ऋतु में प्रत्यारोपित किया जाता है। प्रत्यारोपण के समय रोपित पौधों की सिंचाई करना आवश्यक है।

रखरखाव

प्रत्यारोपण के बाद लगभग 15 दिन के पश्चात् एक सिंचाई तथा पुनः एक माह पश्चात् एक बार और पौधों की सिंचाई की जानी चाहिए। चूंकि क्षेत्र तैयारी के समय गड्ढों में जैविक खाद दी जा चुकी है, अतः बाद में अलग से रासायनिक उर्वरक देने की आवश्यकता नहीं होती है। खरपतवार की रोकथाम के लिए 30 से 45 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार निदाई करना चाहिए। इसकी फसल में रोग अथवा कीट का प्रकोप प्रायः नहीं पाया जाता है।

कटाई (विदोहन)

जड़ों को परिपक्व होने में दो वर्ष का समय लगता है। इसका विदोहन दिसम्बर-जनवरी में करना चाहिए। विदोहन के समय जड़ों को सावधानी से खोदना चाहिए। जड़ों का कुछ भाग जमीन के अन्दर आगामी फसल हेतु छोड़ देना चाहिए। 8-10 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सूखी जड़ें प्राप्त होती हैं।

कटाई उपरान्त प्रबंधन (Post Harvest Management)

खुदाई से प्राप्त जड़ों को पानी से अच्छी तरह धोकर उन्हें किसी ठण्डे व सूखे स्थान पर छाया में सुखाना चाहिए। भलीभांति सूख जाने पर ही इनका भण्डारण करना चाहिए।

ई-चरक ऐप

- जड़ी बूटियों, सुगंधित औषधियाँ, कच्चे माल एवं इनसे संबंधित जानकारी के लिये ई-चरक (ई-मंच) का उपयोग करें।
- यह ऐप एंड्रॉइड मोबाइल, प्ले स्टोर एवं गूगल पर भी उपलब्ध है।

औषधीय पौधों की कृषि तकनीक, प्राथमिक प्रसंस्करण एवं विपणन संबंधी अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें।



क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)



पादप कार्याकी विभाग

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, आधारताल, जबलपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पर्क : 0761-2681200, 97793012385, 8482988599, 9301338726

ई-मेल : rcfcentraljnkvv@gmail.com वेबसाइट : https://www.rcfcentral.org

अनन्तमूल

(*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.)



क्षेत्रीय सह सुविधा केन्द्र (मध्यक्षेत्र)



राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और हौम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार

अनन्तमूल

(*Hemidesmus indicus* (L.) R. Br.)

कुल	: एस्कलेपिडेसी (Asclepidaceae)
संस्कृत नाम	: श्वेत सारिवा, अनन्तमूल, नागजिह्वा
हिन्दी नाम	: अनन्तमूल, अनन्तबेल, कपूरी
अंग्रेजी नाम	: Indian sarsaparilla
आयुर्वेदिक नाम	: अनन्तमूल
व्यापारिक नाम	: सारिवा
उपयोगी भाग	: जड़



अनन्तमूल एक बहुवर्षीय सदाबहार लता है। इसका तना गहरे बैंगनी अथवा बैंगनी भूरे रंग का, पतला रस्सी जैसा, बेलनाकार, गाँठों पर मोटा, जमीन पर लेटा हुआ अथवा किसी वृक्ष के तने के सहारे तंतुओं की सहायता से आंशिक रूप से खड़ा हुआ होता है। इसका तना एवं शाखाएं वामावर्त (anticlockwise) दिशा में मुड़ी हुई होती है। इसको खुरचने पर दूध निकलता है। इसकी जड़ें काष्ठीय तथा सगन्ध (aromatic) होती हैं। ये बहुत लम्बी (कभी-कभी तीन मीटर तक) होती हैं जिसके कारण इस पौधे का नाम अनन्तमूल पड़ा है।

रासायनिक घटक

अनन्तमूल की जड़ों में कोमेरिन (Coumarin), स्टेरॉल्स, हेमीडोस्टेरोल (Hemidosterol), तथा हेमीडेस्मोल (Hemidesmol), रेजिन्स, टैनिन्स, फ़ैटी एसिड्स, सेपोनिन्स तथा ग्लायकोसाइड्स पाये जाते हैं। पौधे के तने में कैरोटेनॉयड (Carotenoid), विटामिन 'ए', विटामिन 'सी', टैनिन्स, फीनोलिक्स, एन्ड्रोसायनिन्स, अपचायक तथा नॉनरिडयूसिंग शर्करा पाये जाते हैं। फूलों तथा पत्तियों में कुमारिन्स, रूटिन (rutin), हाइपेरोसाइड (Hyperonide), फ्लेवेनोइड्स पाये जाते हैं। इस पौधे में पाये जाने वाले रासायनिक अवयवों में हेक्साट्रायाकोन्टेन (hexatriacontane), ल्यूपेरोल (luperol), अल्फा एमायरिन (amyrin), बीटा एमायरिन (Bamyrin), तथा 6 प्रकार के पेण्टीसायक्लिक ट्राईटपिन्स, ल्यूकोडर्मा

लिग्नॉयड्स (leucoderma lignoids), हेमीडेस्मीनाइन (hemidesminine), हेमीडेस्मीन-1, तथा अन्य प्रमुख हैं।

औषधीय उपयोग

अनन्तमूल की जड़े पीड़ा अनुभूति शामक, रक्तशोधक, शांतिदायक (demulcent), स्तम्भक (astringent), स्वेदजनक (diaphoretic), मूत्रवर्धक (diuretic), एंटीपायरिटीक, कैंसररोधी घावों को भरने वाली, अतिसाररोधी, एंटीऑक्सीडेंट, सर्प विषरोधक (antivenom), कुष्ठनाशक, पथरीरोधक, रक्तचाप कम करने वाली (hypotensive), कैंसर निवारक (chemopreventive), मांसपेशियों में ऐठन उत्पन्न करने वाली (spasmodic), जीवाणु प्रजनन नियंत्रक (bacteriostatic), कवकरोधी (antifungal), जीवाणुरोधी (antibacterial) तथा शक्तिवर्धक (tonic) होती है।

परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों में प्राचीन काल से उपयोग हो रही रसायनों में से एक वनस्पति है। दशमूलारिष्ठ सहित लगभग 46 विभिन्न आयुर्वेदिक औषधियों का एक प्रमुख घटक है। इसे त्रिदोषशामक माना जाता है। अनेक रोगों जैसे कुष्ठ, पुराने चर्म रोगों, जीर्णज्वर, दमा, ब्रोकाइटिस, सिफलिस, खुजली, जीर्ण गठिया (chronicrheumatism), प्रदर (leucorrhoea), दाद (herpes), पुरानी खांसी, भूख न लगना, अपच (dypepsia), पेट की गैस, नपुसंकता, अग्निमांद्य, अतिसार, प्रवाहिका, गण्डमाला, आमवात, शुक्रदौर्बल्य, मूत्रकृच्छ, पीलिया (jaundice) श्वासरोगों, अरुचि स्तन्यविकार, उदरविस्तार (abdominaldistension), मिरगी, जोड़ों के दर्द पागलपन, पुराने तंत्रिका रोगों (chronicnervousdisease) तथा श्वास नली में जलन के उपचार में इसका प्रयोग किया जाता है। इसकी जड़ों के पेस्ट के लेप से सूजन तथा गठिया के दर्द में राहत मिलती है। इसके दूध (latex) का प्रयोग आँखों की सूजन के उपचार में किया जाता है। इसकी पत्तियाँ चबाने से ताजगी मिलती है। इसका उपयोग पेय पदार्थों तथा काढ़े के रूप में भी किया जाता है।

वितरण

यह प्रजाति भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, ईरान तथा इण्डोनेशिया में पाई जाती है। भारतवर्ष में यह ऊपरी गांगेय मैदानों, पूर्व में असम तक तथा मध्य, पश्चिम एवं दक्षिण भारत में समुद्र तल से 600 मीटर ऊँचाई तक के कुछ स्थानों पर प्राकृतिक रूप से पाई जाती है।

आकारिकी

इसकी पत्तियाँ सदाबहार, छोटे डंठल (petiole) वाली, दीर्घवृत्तीय अण्डाकार से लेकर रेखीय भालाकार (elliptice-oblongtolinear-lanceolate) तक विभिन्न आकार वाली, एकान्तर (altermate) तथा विपरीत (opposite) क्रम में समायोजित, ऊपर की सतह सफेद तथा निचली सतह रूपहली (silverywhite) होती है। इसके फूल पंचदलीय, बाहर की तरफ हरे रंग एवं अन्दर की तरफ बैंगनी रंग के होते हैं। इन फूलों में डन्डल बहुत ही छोटे होते हैं तथा ये छोटे-छोटे गुच्छे के रूप में लगे होते हैं। इस पौधे में फूल कम ही लगते हैं तथा ये सामान्यतः अक्टूबर से जनवरी तक आते हैं। फल बेलनाकार, पतले, युग्मीय, सफेद रंग के एक कोष्ठीय कूप होते हैं। फल जनवरी माह में परिपक्व हो जाते हैं। फल बहुबीजीय होते हैं। बीज चपटे, लम्बाकार तथा इनकी सतह पर मुलायम बालों जैसा गुच्छा होता है।



जलवायु एवं मृदा

अनन्तमूल की खेती के लिये समशीतोष्ण जलवायु उपयुक्त है। दोमट (loam), गाद (silt) तथा मटियार दोमट (elayloam) मृदाओं में इसे उगाया जा सकता है। थोड़ी क्षारीय मृदा जिसकी pH Value 7.8-8.5 हो, इसकी खेती के लिए अधिक उपयुक्त है। इसके अलावा ह्यूमस युक्त मृदा में अनन्तमूल की वृद्धि दर अधिक होती है।

कृषि तकनीक

प्रवर्धन सामग्री

इसकी खेती के लिए एक वर्ष पुराने पौधों की जड़ों व तने की कटिंग्स का रोपण किया जा सकता है। तने से प्राप्त कटिंग की तुलना में जड़ों से प्राप्त कटिंग